देशी गायों की उपयोगिता तथा उनकी संकर एवं विदेशी नस्ल की गायों से तुलना

रामस्वरूप सिंह चौहान
संयुक्त निदेशक (कैडराड)
भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर–243 122 (उ0प्र0)

देशी गायों की उपयोगिता के विषय में कई प्रकार के प्रश्न किये जाते है। उनकी उपेक्षा मात्र दूध उत्पादन के आधार पर विदेशी या उनसे बने संकर नस्लों की उपयोगिता अधिक आँकी जाती है। जबकि देशी नस्लें दूध तो उपेक्षा कृत कम देती है। मगर उनकी परिवार में उपस्थिति कई प्रकार से लाभदायक सिद्ध हुई है। प्रस्तुत लेख में बिना किसी पूर्वाग्रह के दोनों प्रकार की गायों का तुलनात्मक विवेचन किया जा रहा है।

1. देशी गाय की पीठ कुछ गोलाई लिए होती है जिसे टाट, कुकुछ या भ्नउच कहते है। बैलों/सांडों में यह विशेष रूप से बडा होता है। इसकी उपयोमिता के विषय में अनुसंधान आवश्यक है। विदेशी गायों की पीठ सीधी होती हैं व उनमें टाट नहीं होती है।

2. देशी गाय लम्बाई तथा आकार मध्यम से छोटी होती है। विदेशी गाय आकार व लम्बाई बड़ी होती हैं।

3. देशी गायों में गर्दन के नीचे गलकम्बल ;क्मूसंचद्ध अत्यधिक विकसित होता है। विदेशी गायों गलकम्बल इतना विकसित नहीं होता है।

4. देशी गायों के सींग बडे होते है। विदेशी गायों के सींग छोटे/या नहीं होते हैं।

5. देशी गायों में अयन मध्यम से साधारण आकार का होता है। विदेशी गायों में अयन अधिक विकसित होता है व नीचे तक लटका रहता है।

6. देशी गाय में दूध की उत्पादन क्षमता कम होती है। मगर विदेशी नस्ल के अनुसार दाना दिया जाय तो दूध बढ जाता है। विदेशी गाय में दूध उत्पादन क्षमता अधिक होती है।

7. देशी गायों के बैल चुस्त होते हैं व कृषि कार्य के लिए सर्वथा उपयोगी पाये गये है। विदेशी गायों से प्राप्त बछडे सुस्त होते हैं व कृषि कार्य के लिये उतने कार्यशील नहीं होते है।

8. देशी गायों की आवाज का स्वर दमदार व ऊँची आवाज वाला होता है। विदेशी गाय का स्वर धीमा होता है।

9. देशी गायें भारतीय परिवेश में पली बढी है अतः यहाँ के हर प्रकार के जलवायु में इनकी रहने की क्षमता निर्तिवाद है। यह गायें भीषण गर्मी (वातावरण का तापक्रम 48–50°ब तक रह सकती है व उनके उत्पादन, कार्य क्षमता पर विशेंष प्रभाव नहीं पड़ता है। विदेशी गायें ठन्डे देशों के पर्यावरण में ही रह सकती है। भारतीय परिवेश में रखने के लिए इनके लिए अलग से रहने की व्यवस्था करनी पडती है व ये गायें अधिक गर्मी सहन नहीं कर पाती है तथा इनकी उत्पादन क्षमता घर जाती है व वीमार होने के करण मृत्यु भी हो जाती है।

10. देशी गायों क रखरखाव सस्ता हो जाता है प्रायः ये गायें चरागाह में चरकर ही अपना पेट भर लेती है। फिर भी थोडा दाना व चारा खाकर ये दूध देतह रहतह है। रहने के लिए किसी विशेष आवास की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योकि जहाँ मनुष्य रहते है। यह गाय उसी मकान झोपडी या उसके पास ही रह लेती है। प्रायः विदेशी या संकर नस्ल की गायों को रखने के लिए अलग से व्यवस्था करनी पडती है। क्योकि ये कम तापक्रम पर व अच्छे आवास व्यवस्था व अच्दा चारा दाना देने पर ही इच्छित दूध का उत्पादन कर सकती है। अतः इनके रख रखाव पर खर्चा अधिक करना पड़ता है।

11. देशी गायों में रोगों से बचाव के लिए एक उत्तम प्रकार की रोगप्रतिरोधक क्षमता होती है। सामान्या प्रकार के संक्रमण तोहोते ही नहीं हैं भयानक से भयानक रोग भी साधारण रूप से/ हल्के लक्षण उत्पन्न कर ही निकल जाते है। पोकमा (रिन्डरपैस्ट), गालघोटु आदि रोगों के लिए भी सुग्राही नहीं होती कम होतह है। अतः आर्थिक हानि कम होती है। विदेशी व संकर किस्म की गायों में बीमारियों सें लडने की प्रतिरोधक क्षमता कम होती है अतः यह गाये समान्य किस्म के संक्रमण भी नही झेल पाती व प्रायः बीमार हो जाती है। कुछ रोग तो इनमें होते ही ये मरने लगती है। यथा पेकिना (रिन्डरपैस्ट) गलघोटूँ , मुख–खुर रोग आदि से विदेशी नस्लों की गायें में मृत्यु दर अधिक होती है इनमें बीमार होने की प्रकृति व आकृति अधिक होती है।

12. देशी गायों में दूध उत्पादन क्षमता प्रायः साधारण ही होती है व अयन बीमारी के प्रति इतना सुग्राही नही होता है । थनैला रोग कभी कभी देखने को भी मिलता है मगर उसका समय रहते यदि उपचार कर दिया जाय तो थन में दूध बना रहता है सूखता नहीं । इसका मुख्य कारण अयन के अन्दर उपस्थित प्राकृतिक कारण आयन के अन्दा उपस्थित प्राकृतिक रोग प्रतिरोधी क्षमता (मैक्रोफेज कोशिकाओं) का उत्तम किस्म का होना है। विदेशी गायों में अधिक दूध देने के कारण इनमें थनेला रोग अधिक होता है। इस रोग के जीवाणु त्वचा व थनो पर रहते है थनके छेउ से आयन में प्रवेश कर बीमारी उत्पन्न करते हैं प्रायः इस रोग के पश्चात उस थन का दूध सूख जाता है व

दन गायो की उत्पादन क्षमता घट जाती है। इससे बचाव के लिए अति स्वच्द वातावरण व आवास की आवश्यकता होती है। जिससे इन गायों को पालना महगा सिद्ध होता है।

13. देशी गाय इसी देश की मूल की है अतः बीमारी वाहर से लाने का प्रश्न ही नहीं है।?विदेशी नस्ले कई प्रकार की बीमारियां भी अपने साथ लायी है। जैसे मायकोप्लाज्मा ब्रुसेलौसिस, थिलैरियोसिस, संक्रामक गर्भपात न्यूमोनिया, दस्त राटोवायरस, लैप्टोस्पाइरा, क्षय रोग, बुसैलोसिस क्लेमाइडिया, जोहनीज रोग, इरपग विषाणु रोग आदि। होती थी मगर विदशें से वीर्य/दूध/गाय/साडों द्वारा यह बीमारिया हमारे देश में भी प्रवेश कर गयी अब स्थिति यह है कि इन रोगों के अनुसेधान, निदान व रोकथाम पर एक बडी रकम खर्च करनी पड़ती हे अथवा आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

14. देशी नस्लों का दूध अधिक पौष्टिक होता है। वैज्ञानिक रूप से वसा, प्राटीन आदि में तो खास अन्तर नहीं दिखता है मगर कुछ सूक्ष्म तत्व यथा साइटोकाइन्स, लवण, इन्टर फैरान आदि तत्व दशी गाय के दूध में होगें जो रोगो से लड़ने की क्षमता उत्पन्न करते है। विदेशी गाय अधिक मात्रा में दूध देने के कारण इनका दूध प्रायः पतला व देशी गाय के दूध की अपेक्षा कम पौष्टिक माना गया है।

15. देशी गायों के बछडे बडे होकर उत्तम किस्म के बैल बनते हैं व कृषि कार्य, भार ढोने के कार्य में काम आते है। इन बैलों की ताकत, कार्यक्षमता, सभी प्रकार के पर्यावरण/वातावरण में कार्य कर सकते है व खेती के लिए वरदान है खेती में कार्य करते हुए ये गोवर व मूत्र का उत्सर्जन करते है। जो भूमि की उर्वराशक्ति को बढाता है वहीं ट्रेक्टर से खेती पैट्रोल/तेल/ड़ीजल जलने से भूमिको प्रदूषित करती है। इन बातें का तात्कालिक प्रभाव भले ही दिखायी न दे मगर कालान्तर में हानिकारक होता है। विदेशी गायों के बछड़े उपेक्षाकृत सुस्त व कार्य क्षमता में कम होते है। कृषि कार्य में इनकी खास उपयोगिता सिद्ध नहीं हुई है।

16. देशी गायों के बैलो का उपयोग भार ढ़ोने के काम में मुख्य रूप से जमीन से पानी निकालने, खेत की उवज शहरों तक ले जाने व शहर का समान घर ले जाने व शादी व्याह आदि में सवारी ढोने के कार्य किये जाते रहे हैं आजकल यह कार्य वस, ट्रक, ट्रक्टर आदि जो पैट्रोल डीजल आदि द्वारा चलते है। जो वायु प्रदूषण फैलाते हैं व इनसे हमारी निर्भरता विदेशी आयातित तेल पर बढ रही है। विदेशी गायों के बैल इन कार्यो के लिए उपयोगी नहीं होते है।

17. ऐसा माना जाता है किस देशी गाय अपनी निस्वांस में भी आक्सीजन का काभी अंश छोडती है जो मनुष्य व पर्यावरण के लिए लाभ कारी है। विदेशी गायों में ऐसी किसी विशेषता के विषय में वर्णन नहीं मिलता ।

18. देशी गायों चूंकि संक्रामक रोगों के प्रति कम सुग्रही होती है अतः इनमें क्षय रोग, ब्रुसैला रोग आदि लगने की संभावना बहुत कम रहती है तथा मनुष्य एक ही कमरे छप्पर आदि में गाय के साथ साथ परिवार का जीवन यापन कर सकता है तथा उसे कोई हानि नहीं होती है। विदेशी तथा संकर गायें विभिन्न प्रकार के संक्रमणों के लिए अधिक सुग्राही होती है इनमें क्षम रोग, मायक्रोप्लाज्मा, लैप्टोस्पाइरा विभिन्न विषाणु रोग आदि प्रायः हो जाते है जो दूध, सम्पर्क सांस, मूत्र, गोवर द्वारा मनुष्य में रोग उत्पन्न कर सकते है ऐसा देखा गया है कि जो लोग इस प्राकर की गायें के सम्पर्क में रहते है उनमें क्ष्य रोग, ब्रुसैला रोग आदि होने की संभावना बढ जाती है। हालाकि इन रोगों का पता आसानी से नही लगता फिर भी अनुभव व अध्ययन यह बताते है कि मनुष्य में इन पशुओं से बहुत सी बीमारियाँ लग जाती है।

19. देशी गायें पर्यावरण के अनुकूल है। क्योंकि ये चारा दाना खाने बाद उसे अच्छी तरह पचाती है व वातावरण में मीथेन, कार्वनडाई आक्साइड, कार्वन मानोक्साइड,आमानिया आदि गंसों का कम उत्सर्जन करती है। विदेशी नस्ल की गायें मीथेन, कार्बनडाई– आक्साइड कार्बनमोनोक्साइड, अमोनिया आदि कई प्रकार की हानिकारक गैसो का बहुतायत में उत्सर्जन करती है जो ओजोन पर्त को नुकसान पहुचाती हैं इन्हे ग्रीन हाउस गैस कहतें हैं अतः ये गायें पर्यावरण को हानि पहुचाती है व परावैगनी किरण का पृथ्वी पर प्रभाव बढाने में सहायक है।

20. देशी गाय के दूध, दही, मक्खन, घी, गोमूत्र तथा गोमय से विभिन्न प्रकार की औषधिया निर्मित की जाती है जो मानव स्वास्थ्य के लिए अनपम औषधि सिद्ध हुई है तथा कई प्रकार के असाध्य रोगों की अचूक रामवाण द्रवा माना जा रही हैं। विदेशी गायों के उत्पादों में इस प्रकार के गुणों का वर्णन कहीं नही मिलता है।

21. देशी गायों को दूध, बछडे तथा अन्य उत्पाद जैसे गोमूत्र, गोवर आदि के लिए पाला जाता है अतः इनमें ये जहरी ले टीक लगाने की आवश्यकता ही नही पडती है। विदेशी संकर नस्ल की गायों को मुख्य तथा दूध उत्पादन के लिए रख जाता है जब ये गाये दूध उत्पादन बन्द होन की तरफ होती है तो प्रायः इनके आक्सीटोसिन नामक हार्मोन का टीका लगाकर दूध निकाला जाता है जो मानव स्वास्थ्य के लिए काफी घातक है।

22. देशी गाय अपने मालिक/स्वामी की रक्षा को तत्पर रहती है यह यदि घर बधीं है तो चोर जंगली जानवर/सांप आदि आने पर जोर जोर से रभा कर अपने स्वामी को जगा देती हैं। विदेशी गायों में इस प्रकार का कोई गुण नही मिलता है।

23. देशी गायों के मूत्र की उपयोगिता सर्वसिद्ध है। इसे पवित्र माना गया है व पंचगव्य/पंचामृत माना जाता है नवीन परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि यह प्रजजन क्षमता व रोग प्रतिरोधी क्षमता का बढाता है। विदेशी गायों के मूत्र के विषय में विवरण नहीं मिलता।

24. देशी गाय के गोबर से घर को लीपने से वह परावैगनी किस्मों से मुक्त हो जाताह है। अतः गोबर में ऐसी सामर्थ्य है कि वह हमें विकिरण से बचाता है । दूसरे गोबर में कई प्रकार के जीवाणु व सूक्षमजीव होते है जो प्रोबायोटिक का कार्य करते है। विदेशी गायों के विषय में ऐसी कोई जानकारी नहीं हैं

25. देशी गाय निम्नकोटि के वातावरण में भी निरोग रहकर सामान्य जनन तथा उत्पादन प्रदर्शित करती हैं। विदेशी तथा संकर गायें अच्छे वातावरण में बहुत अच्छी जनन तथा उत्पादन क्षमता प्रदर्शित करती है।

26. चरने वाली देशी गाय क मूत्र तथा गोबर में अनेक औषधीय गुण होते हैं तथा गोबर हमेशा गंध रहित होता है। विदेशी गाय अधिक दाना खाती है जिससे उनके गोबर, मूत्र में कोई औषधीय गुण नहीं होते तथा इनके गोबर से जल्दी ही दुर्गन्ध आने लगती है।

27. देशी गायों का रखरखाव अत्यंत सरल तथा कम खर्चीला है। विदेशी गायों का रखरखाव क्लिष्ट तथा खर्चीला है।

देशी तथा विदेशी/संकार गायों के विभिन्न प्राकर के गुणों–अवगुणों का वितरण ऊपर दिया गया ऐसी कोशिश रही है। कि सभी सूचनाऐ प्रामाणिक रूप से एकत्रित्र कर सम्मिलित की जाय। मगर फिर भी यदि कोई शंका होती है तो व्यर्थ विवाद में न पड़कर उस पर अनुसंधान/प्रयोग किये जा सकते है ताकि उसकी संत्यता की परख हो सके । इस लेख में सम्मिलित सूचना लेखक के अनुभव, अनुसंधान तथा अध्ययन पर आधारित है जिसमें कई प्राकण्कि शास्त्रों/ग्रन्थों से जानकारी शामिल की गयी है अधिकाश तथ्य आधुनिक वैज्ञानिक कसौटियों पर परखे जा चुके है व कई के विष्य में अनुसंधान चल भी रहे है। हमारे धर्म ग्रन्थो में गाय को गो माता ऐसे ही नही कहा गया है। प्राचीन काल में गौ की संख्या के आधार पर ही व्यक्ति की हैसियत का पता चलता था । भगवान कृष्ण ने गौ चराकर, ग्वाले का रूप धारण कर गौ उत्पादों का सेवन कर दुष्ट लोगों का नाश किया तथा मानव कल्याण हेतु गीता जैसे अनुपम सदेश भी दिया। ये सब गौमाता की कृपा का ही फल प्रतीत होता है। सुधी पाठक गण/ सामान्य जनों से यही निवेदन है कि व्यर्थ वहस में न पडकर अपनी देशी गौ को अपनायें। कम से कम एक गौ घर पर अवश्य रखें तथा कोई और जानकारी होने पर लेखक को अवश्य सूचित करने का कष्ट करें ताकि भविष्य में उनके द्वारा प्रदत्त जानकारी का भी गो माता के गुणों के प्रचार प्रसार में किया जा सके।